P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9* December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

नवीन प्रभात त्रिवेदी
प्राचार्य
आत्मानन्द शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

वन्दना अरोड़ा
प्रवक्ता,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
श्री परसराम मदेरणा राजकीय महाविद्यालय,
भोपालगढ़, जोधपुर, राजस्थान

ओ.पी.आर.व्यास
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य,
स्कूल शिक्षा,
जोधपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसमें न्यादर्श हेतु 567 विद्यार्थियों का चयन किया गया। समस्या के परिसीमन हेतु राजस्थान राज्य के जोधपुर, पाली, जालोर, सिरोही, बाड़मेर, जैसलमेर के महाविद्यालयों के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को लिंग, संकाय, वर्ग एवं आर्थिक स्तर के आधार पर वर्गीकृत किया गया। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति के अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण एवं अर्थापन हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन व क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर परिकल्पनाओं के परीक्षण के परिणाम प्राप्त किए गए। परिणाम के आधार पर लिंग, वर्ग एवं आर्थिक स्तर के वर्गीकृत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, जबकि संकाय के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द : पर्यावरण अभिवृत्ति, लिंग, संकाय, वर्ग, आर्थिक स्तर।

प्रस्तावना

प्रकृति और मनुष्य के बीच का संतुलन सदियों–सहस्त्राब्दियों पुराना है। कभी भी इसमें व्यवधान नहीं हुआ था, क्योंकि मनुष्य लालच का शिकार नहीं बना था। दोनों के बीच में एक मीठासा सहसंबंध था। न तो मनुष्य ने प्रकृति के सौंदर्य से छेड़छाड़ की और न उसे लूटने की तजवीज़ ही बिठाई, और उधर प्रकृति ने भी दिल खोलकर उसे ममता, प्यार और दुलार दिया मगर मनुष्य की लिप्सा ने उसे गुड़ गोबर कर दिया। ऊर्जा की अंधाधुंध खपत, वनों की बेशुमार कटाई, अनायास बढ़ती हुई जनसंख्या, तेजी से फैलता हुआ प्रदूषण और उसके बीच संसाधनों का निर्मम शोषण–यही बदला चुकाया मनुष्य ने, प्रकृति की अनुकंपा का। फसलों के लालच ने पृथ्वी के गर्भ को चीर कर रसायनिक खाद से भरने को मज़बूर किया, विलासिता के दृष्टिकोण ने मिलों, फैक्टरियों, कारखानों और संयंत्रों के माध्यम से चारों और प्रदूषण फैलाया, तेज रफ्तार की चाह ने मोटरों, ट्रकों और स्कूटरों आदि की ताबड़–तोड़ दौड़ भाग से वातावरण में धुआँ–ही–धुआँ भर दिया, उपभोग की संस्कृति ने कोयले, पेट्रोलियम एवं अन्य अनेक खनिजों को स्वाहा करने के लिए उसे विवश किया तथा बहादुरी, खान–पान और सजावट की लिप्सा ने जीव–जन्तुओं के व्यापक संहार का रास्ता खोल दिया।

उसे क्या पता था कि वनों की लकड़ी काटते–काटते वह अपनी किस्मत पर भी कुल्हाड़ी चला रहा है। उसे क्या पता था कि कारखानों का दूषित जल नदियों और समुद्र में डाल कर वह न केवल मछलियों और जल–जन्तुओं का ही जीवन समाप्त कर रहा है, अपितु अपनी जीवन–रेखा को भी छोटा करता जा रहा है। वायुमंडल को कार्बन–डाई–ऑक्साइड से भर कर हवा की ताजगी को ही नष्ट नहीं कर रहा, पूरी मानवता के श्वास की गिनती को भी कम कर रहा है।

जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए पर्यावरण की गुणवत्ता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। इस हेतु युवाओं को सौर परिवार, पारिस्थितिकी, प्राकृतिक संसाधन, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, प्रदूषण, पर्यावरणीय समस्याएं, पर्यावरण कानून, पर्यावरण प्रबंधन आदि का ज्ञान देकर पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास किया जाना चाहिए। जिससे वे कालान्तर में स्वयं का जीवन संवार सकें, अपने परिवार को उचित मार्गदर्शन दे सकें, राष्ट्र

को पर्यावरण की समस्याओं से बचा सकें एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों में अपना सहयोग दें सकें। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ताओं ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। वर्तमान में इस विषय की उपादेयता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोधकार्य को करने का निश्चय किया गया।

समस्या कथन

किसी भी अनुसंधान कार्य के लिए समस्या कथन अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। समस्या कथन शोध कार्य के शीर्षक का नाम ही नहीं अपितु समस्या के सम्पूर्ण अध्ययन के विषय की जानकारी प्रदान करता है।अनुसंधान की वर्तमान समस्या का कथन इस प्रकार रखा गया है –

''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित पूर्व में कुछ शोध कार्य किए गए हैं, जिनका विवरण निम्न है–

सिंह एवं गुप्ता (2007) – ने छात्राध्यापकों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विज्ञान वर्ग के छात्राध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता, कला वर्ग के छात्राध्यापकों की अपेक्षा अधिक होती है।

डा. श्रीमती ज्योति सेंगर (2009) – ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन किया। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर पर बालकों की तुलना में बालिकाओं की पर्यावरण जागरूकता का स्तर उच्च है तथा ग्रामीण तथा शहरी बालकों की तुलना में ग्रामीण बालिकाओं की पर्यावरण जागरूकता उपलब्धि का स्तर उच्च है।

एन.पापा.राव (2011) – ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। उससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि कला तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता अधिक पाई गई।

डा. लक्ष्मण सिंह राठौड़ (2015) – ने भावी अध्यापकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन किया। उससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। कला एवं विज्ञान संकाय के भावी अध्यापकों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र में भावी अध्यापकों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

समस्या के उद्देश्य

''उद्देश्य बिना मन्दोडवि न प्रवर्तते''

अर्थात् छोटी सी पिपीलिका भी उद्देश्य के बिना कार्य करने में प्रवृत नहीं होती । उद्देश्य किसी भी कार्य का अन्तिम बिन्दु है जहाँ तक पहुँचने का सतर्क प्रयास किया जाता है। उद्देश्य का निर्धारण ही कार्य को गति प्रदान करता है कार्य करने से पूर्व उद्देश्य निर्धारण आवश्यक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है –

1. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का निम्नलिखित आधारों पर पता लगाना –
   i. लिंग के आधार पर– छात्र एवं छात्राएं
   ii. संकाय के आधार पर– कला एवं विज्ञान
   iii. वर्ग के आधार पर– अनारक्षित एवं आरक्षित
   iv. आर्थिक स्तर के आधार पर–उच्च आर्थिक स्तर एवं निम्न आर्थिक स्तर
2. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का निम्नलिखित आधारों के आधार पर अन्तर ज्ञात करना –
   i. लिंग के आधार पर– छात्र एवं छात्राएं
   ii. संकाय के आधार पर– कला एवं विज्ञान
   iii. वर्ग के आधार पर– अनारक्षित एवं आरक्षित
   iv. आर्थिक स्तर के आधार पर–उच्च आर्थिक स्तर एवं निम्न आर्थिक स्तर

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में परिकल्पना एक ऐसा महत्त्वपूर्ण विचार या निष्कर्ष या सामान्यीकरण है, जो शोधकर्त्ता अपने अनुसंधान की समस्या के बारे में बना लेता है और फिर उसकी जाँच करने के लिए आवश्यक तथ्य एकत्र करता है। यदि अनुसंधान में खोज एवं प्राप्त किये गये तथ्यों से सार्थकता सिद्ध हो जाती है तो यह विचार जिसे परिकल्पना कहा जाता है। एक सिद्धान्त का रूप धारण कर लेता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं –

1. लिंग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. कला एवं विज्ञान संकाय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. अनारक्षित एवं आरक्षित वर्ग के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. उच्च एवं निम्न आर्थिक स्तर के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिसीमन

शोध प्रक्रिया को निश्चित परिणामों तक पहुँचाने तथा अध्ययन को वास्तविक विश्वसनीय तथा वैध बनाने के लिए समस्या को परिसीमन आवश्यक है।

परिसीमन का अर्थ हैं – ''समस्या की परिधि निर्धारित करना, जिससे कि उचित प्रकार से शोध कार्य सम्पन्न हो सके।'' प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा समय, शक्ति एवं परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में समस्या का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया –

1. राज्य–राजस्थान
2. शहर–जोधपुर, पाली, जालौर, सिरोही, बाड़मेर व जैसलमेर के स्नातक स्तर के विद्यार्थी
3. विद्यालय–महाविद्यालय
4. कक्षा–स्नातक स्तर
5. लिंग–छात्र एवं छात्राएं

6. संकाय–कला एवं विज्ञान
7. वर्ग–अनारक्षित एवं आरक्षित वर्ग
8. आर्थिक स्तर–उच्च आर्थिक स्तर एवं निम्न आर्थिक स्तर

न्यादर्श

किसी अनुसंधान कार्य की आधारशिला न्यादर्श हैं: अनुसंधान कार्य के परिणाम एक अच्छे न्यादर्श के ऊपर ही निर्भर करते है। अतः न्यादर्श यदि विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होंगे तो अनुसंधान के परिणाम भी शुद्ध होंगे । एक न्यादर्श तभी उपयुक्त होगा जब वह समष्टि का प्रतिनिधित्व सहीं ढंग से करेगा। न्यादर्श का चुनाव बड़ी कुशलता एवं सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए,अतः अनुसंधान कार्य इसी प्रवृति का होने के कारण प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए उद्देश्य आधारित न्यादर्श विधि का चयन किया गया।

प्रस्तुत शोध में जोधपुर, पाली, जालौर, सिरोही, बाड़मेर व जैसलमेर महाविद्यालयों में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का न्यादर्श का चयन निम्नानुसार किया गया–

क्र.सं.	आधार	वर्गीकरण	संख्या	वर्गीकरण	संख्या	योग
1.	लिंग के आधार पर	छात्र	392	छात्राएं	175	567
2.	संकाय के आधार पर	कला संकाय	336	विज्ञान संकाय	231	567
3.	वर्ग के आधार पर	अनारक्षित वर्ग	175	आरक्षित वर्ग	392	567
4.	आर्थिक स्तर के आधार पर	उच्च आर्थिक स्तर	450	निम्न आर्थिक स्तर	117	567

उपकरण

अनुसंधान से दत्त संकलन हेतु प्रयुक्त होने वाले साधनों को उपकरण कहते है। अनुसंधान की सफलता उपयुक्त उचित उपकरण के चयन पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा तथ्यों के संकलन हेतु प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया जो निम्नलिखित है –

डॉ. सरला पाण्डेय एवं डॉ. अनुराग मिश्रा द्वारा निर्मित परीक्षण – "Development and Validation of Environmental Attitude Scale" (EAS)

यह उपकरण डॉ. सरला पाण्डेय एवं डॉ. अनुराग मिश्रा द्वारा निर्मित एक प्रमापीकृत उपकरण है। जिसका प्रयोग स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मापन करने हेतु किया गया । इस परीक्षण में कुल 50 कथन है। इस उपकरण के लिए कोई समय सीमा निर्धारित नहीं है। फिर भी इसको लगभग 30 मिनट में पूरा करने की सलाह दी गई ।

अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यिकी

किसी भी अनुसंधान में तथ्यों का महत्त्व तब तक नहीं होता जब तक कि तथ्य विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकी विधियों द्वारा न किया जाए। एकत्र सूचनाओं एवं संकलित तथ्यों का विश्लेषण कर व्याख्या की जाती है, तभी वह शोध उद्देश्यपूर्ण एवं उपयोगी होता है।

प्रस्तुत अनुसंधान में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का अध्ययन के परीक्षण से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण अर्थापन हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन व क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। प्राप्त परिणामों को निम्नांकित सारणियों में दर्शाया गया है–

सारणी संख्या 1 – स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का लिंग के आधार पर पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05 पर)
छात्र	392	180.75	30.77	0.51	असार्थक
छात्राएं	175	179.39	28.65		

उपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर के छात्रों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 180.75 तथा प्रमाप विचलन 30.77 है तथा छात्राओं की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 179.39 तथा प्रमाप विचलन 28.65 है। स्नातक स्तर की छात्राओं के मध्यमान की तुलना में स्नातक स्तर के छात्रों का मध्यमान अधिक है, अतः स्नातक स्तर के छात्रों में स्नातक स्तर की छात्राओं की तुलना में पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का स्तर उच्च है।

स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गई, यह मूल्य 0.51 आया है जो 0.05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम है, अतः यह कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों कीपर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 2–स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का संकाय के आधार पर पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

संकाय	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05 पर)
कला संकाय	336	183.19	28.20	2.50	सार्थक
विज्ञान संकाय	231	176.91	30.15		

उपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि कला संकाय के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 183.19 तथा प्रमाप विचलन 28.20 है तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की पर्यावरण

संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 176.91 तथा प्रमाप विचलन 30.15 है। विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में कला संकाय के विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक है, अतः कला संकाय के विद्यार्थियों में विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का स्तर उच्च है।

स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियोंकी पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गई, यह मूल्य 2.50 आया है जो 0.05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से अधिक है, अतः यह कहा जा सकता है कि कला एवं विज्ञान संकाय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी संख्या 3–स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की जाति के आधार पर पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर 0.05 पर
अनारक्षित वर्ग	175	182.56	30.25	0.88	असार्थक
आरक्षित वर्ग	392	180.20	27.16		

उपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 182.56 तथा प्रमाप विचलन 30.25 है तथा आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 180.20 तथा प्रमाप विचलन 27.16 है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक है, अतः अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों में आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का स्तर उच्च है।

स्नातक स्तर के अनारक्षित एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गई, यह मूल्य 0.88 आया है जो 0.05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम है, अतः यह कहा जा सकता है कि अनारक्षित एवं आरक्षित वर्ग के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 4–स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की आर्थिक स्तर के आधार पर पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

आर्थिक स्तर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05 पर)
उच्च आर्थिक स्तर	450	181.87	27.58	1.48	असार्थक
निम्न आर्थिक स्तर	117	177.30	30.08		

उपर्युक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि उच्च आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 181.87 तथा प्रमाप विचलन 27.58 है तथा निम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 177.30 तथा प्रमाप विचलन 30.08 है। निम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों का मध्यमान अधिक है, अतः उच्च आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों मेंनिम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का स्तर उच्च है।

स्नातक स्तर के उच्च आर्थिक स्तर एवं निम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गई, यह मूल्य 1.48 आया है जो 0.05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम है, अतः यह कहा जा सकता है कि उच्च आर्थिक स्तर एवं निम्न आर्थिक स्तर के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध के परिणाम

प्रस्तुत अनुसंधान में राजस्थान राज्य के जोधपुर, पाली, जालौर, सिरोही, बाड़मेर व जैसलमेर जिलों के 567 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति के अध्ययन के सम्बन्ध में परीक्षण प्रशासित किया गया। परीक्षण के प्राप्तांकों का विभेदात्मक विश्लेषण किया गया जिनके परिणाम अग्रलिखित है –

पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति से सम्बन्धित परिणाम

1. **लिंग के आधार पर –** लिंग के आधार पर स्नातक स्तर के छात्रों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 180.75, प्रमाप विचलन 30.77 एवं छात्राओं का मध्यमान 179.39, प्रमाप विचलन 28.65 पाया गया। क्रांतिक अनुपात का मूल्य 0.51 है। जो कि 0.05 विश्वास स्तर पर असार्थक पाया गया।
2. **संकाय के आधार पर –** संकाय के आधार पर स्नातक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 183.19, प्रमाप विचलन 28.20 एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 176.91, प्रमाप विचलन 30.15 पाया गया। क्रांतिक अनुपात का मूल्य 2.50 है। जो कि 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक पाया गया।
3. **वर्ग के आधार पर –** जाति के आधार पर स्नातक स्तर के अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 182.56, प्रमाप विचलन 30.25 एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 180.20, प्रमाप विचलन 27.16 पाया गया। क्रांतिक अनुपात का मूल्य 0.88 है। जो कि 0.05 विश्वास स्तर पर असार्थक पाया गया।
4. **आर्थिक स्तर के आधार पर –** आर्थिक स्तर के आधार पर स्नातक स्तर के उच्च आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान181.87, प्रमाप विचलन 27.58 एवं निम्न आर्थिक स्तर के

विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति का मध्यमान 177.30, प्रमाप विचलन 30.08 पाया गया। क्रांतिक अनुपात का मूल्य 1.48 है। जो कि 0.05 विश्वास स्तर पर असार्थक पाया गया।

शोध की परिकल्पनाओं का परीक्षण

प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर परिकल्पनाओं के परीक्षण का परिणाम इस प्रकार है –

परिकल्पना संख्या–1

''लिंग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

प्रस्तुत शोध के परिणाम में लिंग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, अतः परिकल्पना संख्या – 1 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या–2

''कला एवं विज्ञान संकाय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

प्रस्तुत शोध के परिणाम के आधार पर कला एवं विज्ञान संकाय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः परिकल्पना संख्या – 2 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या–3

''अनारक्षित एवं आरक्षित वर्ग के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

प्रस्तुत शोध के परिणाम के आधार पर अनारक्षित एवं आरक्षित वर्ग के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, अतः परिकल्पना संख्या – 3 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना संख्या–4

''उच्च एवं निम्न आर्थिक स्तर के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

प्रस्तुत शोध के परिणाम के आधार पर उच्च एवं निम्न आर्थिक स्तर के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, अतः परिकल्पना संख्या – 4 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य ''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. प्रस्तुत शोध के परिणाम में लिंग के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. प्रस्तुत शोध के परिणाम के आधार पर कला एवं विज्ञान संकाय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. प्रस्तुत शोध के परिणाम के आधार पर अनारक्षित एवं आरक्षित वर्ग के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. प्रस्तुत शोध के परिणाम के आधार पर उच्च एवं निम्न आर्थिक स्तर के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *अवस्थी, एम.एन. – पर्यावरणीय अध्ययन, विनोद प्रकाशन, आगरा*
2. *अस्थाना, डा. बिपिन एवं अस्थाना श्वेता – मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2*
3. *कॉल लोकेश – शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली*
4. *गैरेट, डा. हेनरी ई. एवं वुडवर्थ, आर. एस. – शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना*
5. *छोकर, किरण बी., पण्ड्या, ममता, रघुनाथन मीना – पर्यावरण बोध, सैग पब्लिकेशन, नई दिल्ली*
6. *तिवारी, डा. चन्दा – मापन, मूल्यांकन एवं प्रश्न पत्र संरचना, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर*
7. *बालिया, डॉ. शिरीष एवं अरोड़ा डॉ. रीता एवं शर्मा डॉ. ओ.पी.– शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर*
8. *भरूचा, इराक– पर्यावरण अध्ययन, ओरिएंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद*
9. *मार्कण्डेय, दिलीप कुमार, राजवैद्य, नीलिमा – प्रकृति, पर्यावरण प्रदूषण एवं नियंत्रण, ए. पी. एच. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली*
10. *व्यास, डा. हरिशचन्द्र, व्यास डॉ. कैलाश चन्द्र – मानव और पर्यावरण, विद्या विहार, दरियागंज, नई दिल्ली*
11. *सिंह डा. भोपाल – जैव, भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण शिक्षा, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली*
12. *श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. एवं वर्मा डॉ. प्रीति – मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2*
13. *Aggarwal, Y.P. - Statistical methods, Sterling Publications Private Limited, New Delhi*
14. *Ahuja, Ram - Reasearch Methods, Rawal Publications, Jaipur and New Delhi*
15. *Asthana, Dr. Bipin B. - Measurement and Evaluation in Psychology and Education, Vinod Pustak Mandir, Agra-2*
16. *Best Joh W., Kahn James V. - Research in Education, PHI learning Private Limited, New Delhi*
17. *Borse, M.N. - Research Methodology, Shree Niwas Publications, Jaipur*
18. *Kerlinger, Fred N. - Foundation of Behavioral Research, Surjeet Publications, Delhi*
19. *Mishra, R.C. - Research in Education, A.P.H. Publishing Corporation, Delhi*
20. *Phophalia, Dr. A.K. - Modern Research Methodology, Paradise Publishers, Jaipur*
21. *Singh Dr. Yogesh Kumar, Nath, Ruchika - Research Methodology, A.P.H. Publishing Corporation, Delhi.*